हस्ती-हीरा-मान चालीसा

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

(संरक्षक : अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

नवकार महामन्त्र

नमो अरिहंताणं

नमो सिद्धाणं

नमो आयरियाणं

नमो उवज्झायाणं

नमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंच नमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

गुरु हस्ती महिमा

बाल्येऽपि संयमरुचिं चतुरं सुविज्ञम्।
कान्तं च सौम्यवदनं सदनं गुणानाम्।।
मौनेन ध्यानसहितेन जपेन युक्तम्।
पूज्यं नमामि गुणिनं गणिहस्तिमल्लम्।।
भक्त्या नमामि दमिनं गणिहस्तिमल्लम्।।

गुरु हीरा महिमा

श्रीरत्नहस्तिगण - नूतनज्ञानसूर्यम्,
शान्तं प्रसन्नवदनं चतुरं सुधीरम्।
प्राप्तं बहुश्रुतपदं करुणावतारम्,
नित्यं नमामि सुप्रियङ्करहीराचन्द्रम्।।
भक्त्या नमामि सुप्रियङ्करहीराचन्द्रम्।।

गुरु महेन्द्र महिमा

श्रीमद्गुमानगणि-रत्न-गजेन्द्रहीरा-
पट्टावतंसकनवं नवमं गणीन्द्रम्।
जैनेन्द्रशासनरथस्य धुराधुरीणं,
पूज्यं महेन्द्रगुरुराजमहं नमामि।।
नित्यं महेन्द्रगुरुराजमहं नमामि।।

हस्ती चालीसा

महावीर मंगल करो, विद्या दो वरदान।
चालीसा गुरुदेव का, गाऊँ हृदय धर ध्यान।।

जय गजेन्द्र जय जय गुरु हस्ती।
पार करो अब मेरी किश्ती।।1।।

पौष सुदि चौदस दिन आया।
बोहरा कुल का भाग्य सवाया।।2।।
केवल कुल में हुए अवतारी।
शोभा आपकी है अति भारी।।3।।
जन्मे शहर पीपाड़ में प्यारे।
माँ रूपा के लाल दुलारे।।4।।

धन्य शहर अजमेर के माँई
गुरुशोभा से दीक्षा पाई।।5।।
बाल उमर में दीक्षा धारी।
महिमा चहुँ दिश में विस्तारी।।6।।
होकर आगम शास्त्र में लीना।
लघु वय में ही भये प्रवीणा।।7।।

पलक प्रमाद न था जीवन में।
प्रतिपल रहते स्व चिन्तन में।।8।।
पाया बोध शास्त्र का गहरा।
ज्ञान-क्रिया का योग सुनहरा।।9।।
बीस वर्ष की वय अति छोटी।
गुरुवर पाई पदवी मोटी।।10।।

पूज्य गुरु आचार्य कहाए।
सन्त, सती, श्रावक मन भाए।।11।।
विचर-विचर उपदेश सुनाया।
फिर से जिनशासन चमकाया।।12।।
दर्शन पाने जो भी आया।
हुआ प्रभावित अति हर्षाया।।13।।

धर्म - ज्योति ऐसी प्रकटाई।
लाखों भक्त बने अनुयायी।।14।।
आगम शास्त्र के थे अति ज्ञाता।
जिनशासन में हुए विख्याता।।15।।
घर-घर ज्ञान का दीप जलाया।
जग को धर्म का मर्म बताया।।16।।

वाणी में था जादू नामी।
बने अनेकों सुपथ गामी।।17।।
धर्म ज्ञान की गंगा बहाई।
पतित जनों की नाव तिराई।।18।।
सामायिक - स्वाध्याय सिखाया।
जन-जन को सन्मार्ग बताया।।19।।

चरण आपके जहाँ पड़ जाते।
धर्म -ध्यान का ठाट लगाते।।20।।
महिमा आपकी सबसे महती।
भीड़ सदा भक्तों की रहती।।21।।
रचे ग्रन्थ इतिहास पुराने।
एक-एक से बने सुहाने।।22।।

जैन-जगत् के दिव्य दिवाकर।
रत्नसंघ के गुण रत्नाकर।।23।।
धर्म-क्रान्ति का बिगुल बजाया।
सोए हुए लोगों को जगाया।।24।।
सच्चे साधक थे महाज्ञानी।
अनुपम योगी आतम ध्यानी।।25।।

भक्तों के भगवान थे प्यारे।
जन-जन के थे एक सहारे।।26।।
परम दयालु करुणाधारी।
मरता नाग बचाया भारी।।27।।
सूर्य समान हुए तेजस्वी।
जग में चमके बने यशस्वी।।28।।

हुआ न होगा ऐसा योगी।
लाखों में थे सन्त सुयोगी।।29।।
जिसने तेरा लिया सहारा।
टल गया उसका संकट सारा।।30।।
जय गुरु हस्ती महा उपकारी।
पल-पल याद करें नर-नारी।।31।।

वर्ष इकहत्तर संयम पाला।
जिनशासन का किया उजाला।।32।।
जीवन अपना अन्तिम जाना।
हर्षित हो संथारा ठाना।।33।।
आत्म-शक्ति अनुपम बतलाई।
अमिट कहानी एक बनाई।।34।।

आठम सुद बैसाख की जानो।
रवि पुष्य का योग बखानो।।35।।
गाँव निमाज में स्वर्ग सिधाया।
तेरह दिन संथारा आया।।36।।
जब तक नभ में चाँद सितारे।
गुण गायेंगे सभी तुम्हारे।।37।।
जय गुरु हस्ती बोलो भाई।
नाम जपत सब विघ्न नसाई।।38।।

जय गुरु हस्ती दीन दयाला।
जपते आपके नाम की माला।।39।।
आओ गुरुवर के गुण गाओ।
जीवन अपना श्रेष्ठ बनाओ।।40।।
जो नर यह चालीसा गावे।
सुख, शान्ति, मंगल वह पावे।।41।।

मुनि गौतम गुरुदेव का, धरें हृदय में ध्यान।
'हस्ती चालीसा' कही दीना, आवे मुझको ज्ञान।।

जो यह चालीसा पढ़े, लगन सहित चित्त लाय।
गुरु हस्ती मेहर करे, ताको सुख उपजाय।।

रचयिता–श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

हीरा चालीसा

गुरु हस्ती को नमन करूँ, सिमरूँ आठों याम।
हीरा चालीसा पढ़ूँ, सिद्ध करो सब काम।।

जयगुरु हीरा मंगलकारी।
जीवन गाथा गाएँ तिहारी।।1।।
चैत्रवदी आठम को जाया।
गाँधी कुल का भाग्य सवाया।।2।।
मारवाड़ मरुधर मन भानो।
धन्य शहर पीपाड़ को जानो।।3।।

माँ मोहिनी के सुत प्यारे।
मोतीजी के राज दुलारे।।4।।
प्रिय बहन जब स्वर्ग सिधाई।
दीक्षा लेने की मन आई।।5।।
गुरु हस्ती पीपाड़ पधारे।
हीरा के बन गए सहारे।।6।।

दिवस कार्तिक सुदी छठ आया।
हीरा ने था संयम पाया।।7।।
हस्ती ने हीरा चमकाया।
आगम का सद् रहस्य बताया।।8।।
षड्दर्शन का अध्ययन कीना।
भाषाओं में भये प्रवीणा।।9।।

यथा नाम तथा गुण पाया।
हस्ती को हीरा मन भाया।।10।।
अन्त समय एक पत्र लिखाया।
हीरा को आचार्य बनाया।।11।।
जेठ वदि पञ्चम शुभ आई।
पूज्य पछेवड़ी थी ओढ़ाई।।12।।

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर।
हीरा गुरुवर है ज्योतिर्धर।।13।।
धर्म - ध्यान का ठाट लगाया।
हस्ती गुरु का पाट दिपाया।।14।।
ब्रह्मचर्य का तेज निराला।
जन-जन पर जादू कर डाला।।15।।

जिनशासन चमकाया भारी।
निर्ग्रन्थ श्रमण अतिशय धारी।।16।।
व्यसन - मुक्ति अभियान चलाया।
नवयुवकों को खूब जगाया।।17।।
गुरु हीरा से प्रेरणा पाएँ।
कई हजार गोवंश बचाएँ।।18।।

द्वेष मिटाया प्रेम बढ़ाया।
संगठन का बिगुल बजाया।।19।।
जहाँ-जहाँ हीरा गुरु जाते।
तप-त्याग की ज्योति जगाते।।20।।
आगम ज्ञाता उग्र - विहारी।
महिमा अपरम्पार तिहारी।।21।।

अमृत - वाणी जब बरसावे।
उमड़-उमड़ कर जनता आवे।।22।।
जो कोई दर्शन आपके आता।
आनन्दित होकर वह जाता।।23।।
चमक रहा है हीरा प्यारा।
हर्षित है जन-गण-मन सारा।।24।।

धीर - वीर - गम्भीर गुणाकर।
रत्नसंघ के गुण - रत्नाकर।।25।।
अधम उद्धारक भविजन तारक।
चिन्ताचूरक कष्ट निवारक।।26।।
हीरा है पर कोमलता है।
चन्दा जैसी निर्मलता है।।27।।

अद्भुत त्याग का जोग रमाया।
रत्नसंघ का नाम कमाया।।28।।
श्रमण - संस्कृति के उन्नायक।
आगमवारिधि संघ के नायक।।29।।
हीरा गुरुवर आनन्दकारी।
जन-जन के हैं वल्लभकारी।।30।।

हीरा गुरुवर कोहिनूर हैं।
तप - संयम में बड़े शूर हैं।।31।।
हीरा जाके मना बिराजे।
वासे व्यसन दूर ही भागे।।32।।
हीरा से तुम नाता जोड़ो।
दुर्व्यसनों से मुखड़ा मोड़ो।।33।।

हस्ती हीरा का नाम रटो।
कलिमल भावों से दूर हटो।।34।।
जो हस्ती-हीरा को ध्यावे।
उसकी हस्ती बढ़ती जावे।।35।।
हम सब हैं प्रभु दास तुम्हारे।
नाव लगा दो नाथ किनारे।।36।।

जग अन्धियारा आप प्रभाकर।
हमें प्रकाशित करो दिवाकर।।37।।
भाव - भक्ति से गुरु - गुण गाते।
विमल-नवल मिल शीश नमाते।।38।।
सब मिलकर चालीसा गाओ।
हीरा गुरु को हृदय बिठाओ।।39।।

जो नर यह चालीसा गावे।
हीरा के गुण उसमें आवे।।40।।
'हीरा चालीसा' कहा, सुनो सभी नरनार।
हीरा गुरु के पथ चलो, पालो सद्-आचार।।

रचयिता-श्री नवल डूँगरवाल 'नवीन'

मान चालीसा

गुरु गजेन्द्र प्रताप हैं, जय जय गुरुवर मान।
चौथे पद नवकार के, करता हूँ गुणगान।।

मान गुरुवर गुण नित गाऊँ।
तब चरणन में शीश झुकाऊँ।।1।।
चरणकमल तव शरण अनुपम।
विपुल गुणों के पूजक हैं हम।।2।।
साँझ सवेरे ध्यान लगाएँ।
निश दिन जीवन गाथा गाएँ।।3।।

शहर रतनवंश राजधानी।
जोधपुर मध्य जनमे ज्ञानी।।4।।
छोटीबाई कोख उजाली।
चहुँदिश फैली यश की लाली।।5।।
अचलचन्दजी तात तिहारे।
पूज्य पिता के प्राण पियारे।।6।।

भौतिक सुख क्षणभंगुर जाना।
प्रबल भाव वैराग सुहाना।।7।।
हस्ती गुरुवर दीनदयाला।
मोक्ष - मार्ग का खोला ताला।।8।।
दीक्षित कर निजशिष्य बनाया।
उपाध्याय के पाट बिठाया।।9।।

निकल पड़े गुरु शिवपुरपथ पर।
भव-वन पार उतारण रथ पर।।10।।
आत्म - साधना लीन अनवरत।
विषय - वासनाओं से उपरत।।11।।
धरम संघ के जो संवाहक।
निरमल धरमनीति निरवाहक।।12।।

कवि लेखक वक्ता व्याख्याता।
आगम सूक्तों के उद्गाता।।13।।
सरलमना हो समताधारी।
गुरुवर शाश्वतसुख अधिकारी।।14।।
तपमय जीवन के निरमाता।
बत्तीसों आगम के ज्ञाता।।15।।

उपाध्याय जी महाधुरन्धर।
लेश नहीं अभिमान गुरुवर।।16।।
कभी संघ सारण वारण में।
विधि - विधान के निरधारण में।।17।।
सरल मिष्टभाषी मुनि माना।
गुरुवर दरशन तत्त्वनिधाना।।18।।

वाणी भूषण गुणरत्नाकर।
प्रवचन हैं गागर में सागर।।19।।
प्रवचन सुनि आतमबल जागे।
धरम करम में मनवा लागे।।20।।
गहन तत्त्व झट में समझाते।
जड़ से मिथ्या रोग मिटाते।।21।।

जन हितैषी समाज सुधारक।
जैन धरम के प्रबल प्रचारक।।22।।
घर-घर ज्ञान-गंगा बहाई।
ऊँची धरम ध्वजा फहराई।।23।।
धर्मक्रान्ति का बिगुल बजाया।
रूढ़िवाद का भूत भगाया।।24।।

वरद हस्त हस्ती का पाकर।
विभूता पाई है बढ़चढ़कर।।25।।
जिनशासन का गगन - सितारा।
मान गुरुवर मोहनगारा।।26।।
क्रोध-मोह-मद-माया त्यागी।
गहन गम्भीर धीर वैरागी।।27।।

तप - स्वाध्याय ध्यान का सङ्गम।
मुखमण्डल की छवि विहङ्गम।।28।।
अतिशय मान गुरु को भारी।
कलजुग में गुरुवर अवतारी।।29।।
मान गुरु महामंगलकारी।
जय जय भवभय - भञ्जनहारी।।30।।

शमदम अनुपम पुष्प खिले हैं।
जनमन श्रद्धा जोत जले हैं।।31।।
मांगलिक की महिमा भारी।
सुखसम्पत अरु साताकारी।।32।।
निष्कारण गुरु पर उपकारी।
लगी आपसे मम इकतारी।।33।।

डगमग डोले मेरी नैया।
बन जाओ प्रभु आप खिवैया।।34।।
जनमन अन्तर क्लेश हरो प्रभु।
कल्मष हर अन्तरस् विचरो विभु।।35।।
सुमर - सुमर तुम सम हो जायें।
पारस परसि कनक बनि जायें।।36।।

सुमिरत मान ज्ञान प्रकाशे।
आलस पाप अविद्या नाशे।।37।।
मिला मान गुरु का शरणा।
आधिव्याधि से अब क्या डरना।।38।।
शुद्ध भाव चालीसा गावे।
आत्मिक शान्ति वह नर पावे।।39।।

जो यह पाठ करे धरि ध्याना।
पावे सकल धरम विज्ञाना।।40।।
भक्त जनों के हित किया, चालीसा निरमान।
भक्तों की इच्छा फले, 'नवल' करे अरमान।।

रचयिता–श्री नवल डूँगरवाल 'नवीन'

श्रीमती सुधा देवीजी

एवं

स्व. श्रीमान् टीकमचन्दजी हीरावत

की प्रेरणा से

गुरु हस्ती के दो फरमान।
सामायिक-स्वाध्याय महान्।।
गुरु हीरा का यह सन्देश।
व्यसनमुक्त हो देश-विदेश।।

प्रकाशक
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
सुबोध बॉयज सीनियर सेकेण्डरी स्कूल के ऊपर,
बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) 0141-2575997

मूल्य : 5/- (पाँच रुपये मात्र)